International Research Journal of Human Resources and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2349-4218)
Impact- Factor 5.414 Volume 5, Issue 3, March 2018
Website- www.aarf.asia, **Email** : editoraarf@gmail.com

हिंदू मेला: सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की प्रथम संगठित अभिव्यक्ति

डॉ. रमेश कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास,
राजकीय महाविद्यालय छछरौली

शोध सारांश: यह शोधपत्र भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में हिन्दू मेला की महत्वपूर्ण भूमिका का गहन विश्लेषण करता है। हिन्दू मेला सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की पहली संगठित अभिव्यक्ति थी। हिंदू मेला, बंगालियों में राष्ट्रवादी भावनाएँ जगाने के उद्देश्य से 1860 के दशक के अंत में कलकत्ता में स्थापित एक सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था थी। इसके पीछे 'नैशनल पेपर' नामक समाचार पत्र के संपादक नवगोपाल मित्र की प्रेरणा थी। उन्होंने हिंदू अतीत के गौरव को पुनर्जीवित करने और पश्चिमी शिक्षा एवं संस्कृति की व्याख्या स्वदेशी सभ्यता के संदर्भ में करने की अवधारणा के पीछे लोगों, विशेषकर शिक्षित युवाओं को एकजुट करने का विचार रखा। हिंदू मेले का उद्देश्य लोगों को हिंदू सभ्यता के गौरव से अवगत कराना। प्राचीन हिंदू सभ्यता के सर्वोत्तम पहलुओं को पुनर्जीवित करके अंग्रेजों के सांस्कृतिक उपनिवेशवाद से लड़ने के नवगोपाल मित्र के विचार को टैगोर परिवार के कई सदस्यों का दृढ़ समर्थन प्राप्त था, जो इस नए आंदोलन के मुख्य वित्तपोषक थे। हिंदू मेला, जिसे चैत्र मेला के नाम से भी जाना जाता है, 1867 में कलकत्ता (कोलकाता) में स्थापित एक राजनीतिक और सांस्कृतिक उत्सव था। इसकी स्थापना नवगोपाल मित्र ने राजनारायण बोस और टैगोर परिवार के सहयोग से की थी। राजनारायण बोस के विचारों से प्रेरित नवगोपाल मित्र ने हिंदू मेले की स्थापना की। अन्य लोगों सहित टैगोर परिवार भी इसमें गहराई से शामिल था। इस मेले का उद्देश्य राष्ट्रीय गौरव में वृद्धि, स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देना और भारतीयों में एकता और आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करना था। यह शोधपत्र हिन्दू मेल की वैचारिक नींव, गतिविधियों और उसकी अंतिम विरासत का परीक्षण करता है। इसकी अंग्रेजों के सांस्कृतिक उपनिवेशवाद से लड़ने की मूल विचारधारा का विश्लेषण करेगा, इसकी महत्वपूर्ण गतिविधियों का विवरण देगा, और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर इसके समग्र प्रभाव का आकलन करेगा।

संकेत शब्द: हिन्दू मेला, सांस्कृतिक राष्ट्रीयता, सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था, संस्कृति, स्वदेशी, सांस्कृतिक उपनिवेशवाद, आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक उत्सव, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन।

हिन्दू मेला सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की पहली संगठित अभिव्यक्ति थी। हिंदू मेला, बंगालियों में राष्ट्रवादी भावनाएँ जगाने के उद्देश्य से 1860 के दशक के अंत में कलकत्ता में स्थापित एक

© Associated Asia Research Foundation (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था थी। इसके पीछे 'नैशनल पेपर' नामक समाचार पत्र के संपादक नवगोपाल मित्र की प्रेरणा थी। उन्होंने हिंदू अतीत के गौरव को पुनर्जीवित करने और पश्चिमी शिक्षा एवं संस्कृति की व्याख्या स्वदेशी सभ्यता के संदर्भ में करने की अवधारणा के पीछे लोगों, विशेषकर शिक्षित युवाओं को एकजुट करने का विचार रखा। हिंदू मेले का उद्देश्य लोगों को हिंदू सभ्यता के गौरव से अवगत कराना, उन्हें राष्ट्रीय भाषा और विचारों के विकास के लिए प्रेरित करना तथा राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करना था। प्राचीन हिंदू सभ्यता के सर्वोत्तम पहलुओं को पुनर्जीवित करके अंग्रेजों के सांस्कृतिक उपनिवेशवाद से लड़ने के नवगोपाल मित्र के विचार को टैगोर परिवार के कई सदस्यों का दृढ़ समर्थन प्राप्त था, जो इस नए आंदोलन के मुख्य वित्तपोषक थे।

हिंदू मेला, जिसे चैत्र मेला के नाम से भी जाना जाता है, 1867 में कलकत्ता (कोलकाता) में स्थापित एक राजनीतिक और सांस्कृतिक उत्सव था। इसकी स्थापना नवगोपाल मित्र ने राजनारायण बोस और टैगोर परिवार के सहयोग से की थी। राजनारायण बोस के विचारों से प्रेरित नवगोपाल मित्र ने हिंदू मेले की स्थापना की। ज्योतिरिंद्रनाथ टैगोर और अन्य लोगों सहित टैगोर परिवार भी इसमें गहराई से शामिल था। इस मेले का उद्देश्य राष्ट्रीय गौरव में वृद्धि, स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देना और भारतीयों में एकता और आत्मनिर्भरता की भावना का विकास करना था।

अप्रैल 1867 में, चैत्र संक्रांति (बंगाली वर्ष का अंतिम दिन) के दिन इसकी स्थापना की गई। मेले के पहले दिन एक औपचारिक समिति का गठन किया गया। गणेशनाथ टैगोर इसके प्रथम सचिव और मेले के वास्तविक आयोजक नवगोपाल मित्र सहायक सचिव बने। मेले में सक्रिय रुचि लेने वालों में राजा कमल कृष्ण बहादुर, गिरीश चंद्र घोष, रामनाथ टैगोर, प्यारे चरण सरकार, राजनारायण बसु, द्विजेंद्रनाथ टैगोर और कृष्णदास पाल शामिल थे।

इसका मुख्य लक्ष्य राष्ट्रीय गौरव और देशभक्ति की भावना जगाना था, आयातित ब्रिटिश वस्तुओं की बजाय स्थानीय उत्पादों के उपयोग को प्रोत्साहित करना था। इसका उद्देश्य एकता, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना भी था।इस मेले में स्वदेशी हस्तशिल्प की प्रदर्शनियाँ, शारीरिक कौशल का प्रदर्शन और कुश्ती तथा लाठी-युद्ध जैसे देशी खेलों की प्रतियोगिताएँ शामिल थीं। मेले में हिन्दू धार्मिक नाटकों का मंचन भी होता था। मेले में हिंदू देवताओं को विभिन्न रूपों में दर्शाया/चित्रित किया जाता था, उदाहरण के लिए, शिव को एक पुष्कर बिजमाला दी गई; कैसे कृष्ण को काली की मूर्ति में रूपांतरित किया गया। मेले में प्रदर्शनी का आयोजन होता था जिसमे राष्ट्रीय स्तर की हर वस्तु, कलाकृतियाँ, हस्तशिल्प, कुटीर उद्योग आदि प्रदर्शित की जाती थी।

पहले तीन वार्षिक समारोह, जिन्हें आयोजकों द्वारा चैत्र मेला और राष्ट्रीय मेला कहा जाता था, चैत्र संक्रांति पर आयोजित किए गए थे। वार्षिक मेले का उद्घाटन द्विजेंद्रनाथ के देशभक्ति गीत, *मलिना मुखचंद्र मा भारत तोमारी* (हे भारत माता, तुम्हारा चंद्र मुख कितना उदास है...)

से होता था। बेलगछिया में आयोजित और ज्ञानेंद्रनाथ टैगोर की अध्यक्षता में दूसरे वार्षिक मेले (1868) में, सत्येंद्रनाथ टैगोर द्वारा रचित देशभक्ति गीत *गाओ भारतेर जया* (भारत की विजय का गान गाओ) प्रस्तुत किया गया था। इसके बाद मेले के सभी आगामी सत्रों का उद्घाटन इसी गीत से हुआ और इसने इतनी लोकप्रियता हासिल की कि यह नवोदित राष्ट्रवादियों का राष्ट्रीय गीत बन गया, जब तक कि बंकिमचंद्र के बंदे मातरम् ने इसका स्थान नहीं ले लिया। उसी समारोह में द्विजेंद्रनाथ टैगोर द्वारा रचित एक नया देशभक्ति गीत एक अन्य टैगोर, हेमेंद्रनाथ टैगोर द्वारा प्रस्तुत किया गया था। जीवन स्मृति में, रवींद्रनाथ टैगोर ने स्मरण किया:

"हिंदू मेला हमारे परिवार के सहयोग से आयोजित किया गया था। इसकी स्थापना 1866 में हुई थी और इसे चैत्र मेला के नाम से जाना जाता था। इसी नाम से एक पत्रिका भी प्रकाशित होती थी। इसका संपादन गगनेंद्रनाथ टैगोर ने किया था। इसके सह-संपादक, नवगोपाल मित्र, हिंदू मेला के मुख्य आयोजक थे। यह भारतवर्ष को स्वदेश के रूप में स्थापित करने का पहला संगठित प्रयास था। मेरे एक बड़े भाई ने देशभक्ति गीत 'मिले सोबे भारतसंतान' (भारत के सभी पुत्रों, एक हो जाओ) की रचना की थी।"

लगभग छह वर्षों तक मेले का वार्षिक आयोजन बड़े धूमधाम और भव्यता के साथ होता रहा। प्रदर्शनियों के साथ आयोजित इस वार्षिक आयोजन ने कविता, संगीत, नाटक और बांग्ला साहित्य एवं लोककथाओं की अन्य सभी शाखाओं में देशभक्ति की लहर पैदा करने में सफलता प्राप्त की। इसकी कार्यवाही सभी समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में विस्तार से प्रकाशित हुई। मेला 1875 के अपने वार्षिक सम्मेलन में अपनी सफलता के चरम पर पहुँच गया, जिसकी अध्यक्षता उस समय के सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति, राजनारायण बोस ने की थी। इसी सम्मेलन में 14 वर्षीय रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी बंगाली कविता - हिंदू मेलार उपहार (हिंदू मेला का उपहार) का पाठ किया, जो 25 फ़रवरी 1875 के अमृत बाज़ार पत्रिका में प्रकाशित हुई थी उसका हिन्दी रूपांतरण निम्न प्रकार से था:

हिमाद्रि के शिखर पर, एक चट्टान पर बैठे हुए,
ऋषि व्यास के गीत, हाथ में वीणा लिए हुए --
पहाड़ की चोटियाँ काँप रही हैं,
धुंधली हवा काँप रही है।
शिखर मौन हैं, ताज़गी मौन है,
राजसी आत्मा हिलती नहीं, पत्तियाँ मौन हैं।
विशाल विस्तार मौन है, गतिहीन है;
झरना मौन बह रहा है।
पूर्णिमा की रात -- चाँद की किरणें --
शिखर, घाटियाँ,
सागर-उर्मि, हरे-भरे मैदान,

चाँदी की धाराओं में बहते हुए, नीचे लुढ़कते हुए।
झनझनाती वीणा कवि गाता है,
"हे भारत, तू क्यों, हाय,
फिर मुस्कुरा!
क्या इस गहरे दुःख में भी मुस्कुराने का कोई दिन है?
मैं देखता था जब, यमुना के तट पर,
पूर्णिमा की रात, रात्रि के शांत वातावरण में,
राजा युधिष्ठिर, विश्राम के तट पर,
सुखपूर्वक रात्रि बिता रहे थे,
और रात्रि, रात्रि के शांत वातावरण में।
तब मुस्कुराना अच्छा लगता था,
तब खुश रहना अच्छा लगता था,
श्मशान स्वर्ग सा लगता था,
रेगिस्तान उपजाऊ मैदान सा लगता था।
तब पूर्णिमा खुशी देती थी,
सुबह की मधुर हँसी खुशी देती थी,
प्रकृति की सुंदरता खुशी देती थी
पक्षियों का चहचहाना अच्छा लगता था।
अभी नहीं, अभी नहीं,
अब वह खुशी चली गई है। समय।
अब उदासी और अँधेरा हमें घेर लेते हैं,
हँसी और खुशी अब अच्छी नहीं लगती।
अब मेरा अँधेरा छा जाए,
भारत का स्वर्ग रेगिस्तान बन जाए,
चाँद और सूरज बादलों में छिप जाएँ
प्रकृति की व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो जाए।
भागीरथी अग्निकुंड बन जाए,
बाढ़ हिमालय के ऊपर से गुजर जाए,
भारत सागर के जल में डूब जाए,
इसे टूटकर बह जाने दें।
मैं अब भारत नहीं देखना चाहता,
मैं अब भारत नहीं देखना चाहता,
इसे टूटकर बह जाने दें।
मैंने वह दिन देखा है जब पृथ्वीराज ने,
युद्ध में क्षत्रिय कार्य सिद्ध करके,
युद्ध में पुरुष का कार्य सिद्ध करके,

कृतान्त-कोले में शरण ली थी।
मैंने देखा है उस दिन, दुर्गावती,
मैंने वीर योद्धाओं की चिताएँ देखीं,
मैंने उन्हें आश्चर्य और दुःख में देखा।
उनकी स्मृति,
मैं आश्चर्य से स्तब्ध हूँ;
हालाँकि उनकी राख,
मिट्टी में मिल गई है!
मैंने फिर देखा वो दिन,
जब यह भारत भूमि स्वतंत्र थी
कितना सुखद दिन था! कितना सुखद दिन था!
क्या वो दिन फिर कभी आएगा?
राजा युधिष्ठिर (मैंने अपनी आँखों से देखा)
आर्य सिंहासन पर विराजमान स्वतंत्र राजकुमार,
काव्य के छंदों में वीणा के तारों पर,
वह सब तो बस एक कहानी है!
मैंने फिर सुना, मैंने फिर सुना,
रघु के पुत्र राम ने राज्य संभाला,
उन्होंने इस भारत भूमि पर शासन किया,
क्या वो दिन वापस आएगा!
अब भारत का कंकाल क्या है,
क्या इसे नया जीवन मिलेगा, अफ़सोस;
भारत की राख में आग जलेगी,
क्या यह फिर कभी रोशनी देगी।
अगर नहीं, तो क्यों,
मुस्कुराओ भारत! फिर से मुस्कुराओ,
उस दिन की याद ताज़ा हो जाती है,
क्या तुम्हारी आँखें उदासी के पानी में नहीं तैरतीं?
अब मेरा अँधेरा आ जाए,
भारत का स्वर्ग रेगिस्तान बन जाए,
चाँद और सूरज बादलों में डूब जाएँ,
प्रकृति का क्रम छिन्न-भिन्न हो जाए।
भागीरथी अग्निकुंड बन जाए,
हिमालय में बाढ़ आ जाए,
भारत के सागर के जल में डूब जाए,
टूट जाए, चुरा ले और बह जाए।

मेरी स्मृति के अक्षर मिट जाएँ,
वे शून्य में विलीन हो जाएँ,
इस खाली हृदय को डूब जाने दो,
मेरे अमर जीवन को डूब जाने दो,
अनंत गहराई के जल में।

इससे स्पष्ट है कि इस मेलें में किस प्रकार से भारत की पराधीनता तथा भारत के हिन्दू गौरव का गान किया जाता था। इससे बंगाल में स्वराज एवं स्वदेशी कि भावना को बल मिला। 1867 से 1880 तक, हिंदू मेला चौदह बार आयोजित हुआ। मेले के चौथे सत्र के बाद, 'राष्ट्रीय समाज' नामक एक समूह का गठन किया गया। चूँकि मेला केवल हिंदुओं के लिए था, इसलिए "राष्ट्रीय" शब्द के प्रयोग को चुनौती दी गई। इसके विरुद्ध, मेला के मुखपत्र, राष्ट्रीय समाचार पत्र ने इस प्रकार कहा कि हम यह नहीं समझ पाते कि हमारे संवाददाता हिंदुओं पर आपत्ति क्यों जताते हैं, जो निश्चित रूप से स्वयं एक राष्ट्र का निर्माण करते हैं, और इस प्रकार उनके द्वारा स्थापित समाज को "राष्ट्रीय समाज" कहा जा सकता है नवगोपाल मित्र ने अपने लेखों के माध्यम से हिंदू राष्ट्रवाद के बारे में अपने दृष्टिकोण को विस्तृत किया। "यूनानियों में राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने वाले सिद्धांत थे देश प्रेम, यहूदियों में मूसा के कानून, रोमनों में स्वतंत्रता और यश का प्रेम, और अंग्रेजों में स्वतंत्रता का प्रेम।"

बाद में हिंदू मेला की प्रदर्शनियों और सत्रों में लोगों कि संख्या घटने लगी। हिंदू भारत के पुनरुद्धार का नवगोपाल का सपना मध्यम वर्ग की नई पीढ़ी का समर्थन पाने में विफल रहा, जिन्हें धर्म-आधारित राष्ट्रवाद राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से सही नहीं लगा। वे सुरेंद्रनाथ बनर्जी और आनंद मोहन बोस द्वारा शुरू किए गए एक नए संगठन, इंडियन एसोसिएशन की ओर आकर्षित हुए। हिंदू मेला एक और बड़ी कमज़ोरी से ग्रस्त था, वह थी इसके आयोजकों का राजनीतिक गतिविधियों में शामिल न होने का दृढ़ संकल्प। राजनीति के बिना देशभक्ति जगाना इसके अधिकांश शिक्षित सदस्यों को, जो उस समय खुद को राजनीतिक रूप से संगठित करने के लिए उत्सुक थे, अव्यावहारिक लगता था। इसके अलावा, टैगोर, जो पहले मेले का बौद्धिक नेतृत्व करते थे और इसे पर्याप्त धन भी देते थे, अब मेले में रुचि नहीं रखते थे। इस प्रकार, 1880 और 90 के दशक की नई और जटिल माँगों का सामना करने में असमर्थ होने के कारण हिंदू मेला 1890 के दशक में लुप्त हो गया। लेकिन बंगालियों के मन में 'स्वदेशी' की भावना जो यह जगा सका, वह जीवित रही। बल्कि, 20वीं सदी के आरंभ में स्वदेशी आंदोलन में इसे और अधिक संगठित मंच मिला।

हिंदू मेला स्वदेशी आंदोलन का अग्रदूत माना जाता है, जिसने विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और भारतीय उद्योगों को बढ़ावा देने की वकालत की। इसने राष्ट्रवादी चेतना और सांस्कृतिक पहचान के विकास में भी योगदान दिया। रष्ट्रीय गौरव, सांस्कृतिक पुनरुत्थान और आत्मनिर्भरता पर मेले के ज़ोर का भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन पर अमिट प्रभाव पड़ा। इसने

स्वदेशी कला, शिल्प और खेलों को बढ़ावा देने के लिए एक मंच प्रदान किया और भारतीयों में एकता की भावना को बढ़ावा दिया। इस मेले में गैर-हिंदू समूहों के संदर्भगत समावेश में स्पष्ट था। धार्मिक विभाजन की रेखाएँ धुंधली थीं। मेला सभी वर्गों, श्रेणियों और धार्मिक-सांप्रदायिक समूहों के भारतीयों के लिए खुला था। मेले की विचारधारा स्वदेश अर्थात भारत भूमि की अवधारणाओं से जुड़ी हुई थी।

संदर्भ:

1. Gupta, Swarupa, Notions of Nationhood in Bengal: Perspectives on Samaj, c. 1867-1905, Brill, 2009.
2. Sen, Sailendra Nath, An Advanced History of Modern India, Macmillan India, 2010.
3. Sen, Amiya P., Colonial Hinduism: An Introduction, (Oxford Centre for Hindu Studies Series).
4. Datta, Amaresh, Encyclopaedia of Indian Literature: Devraj to Jyoti, Sahitya Akademi, 1988.
5. Mukhopadhyay, Suvendushekhar. Hindu Melar Itibritta (History of the Hindu Mela) in Bengali, 2000.
6. Bandopadhyay, Hiranmay, Thakurbarir Katha (Tales of the Tagore Family) in Bengali, 1966.
7. Basu, Rajnarayan, Prospectus of a Society for the Promotion of National Feeling among the Educated Natives of Bengal, 1866.
8. Biographies and works related to Nabagopal Mitra (the chief organizer) and Dwijendranath Tagore (an early secretary and poet for the Mela).
9. Hogan, Patrick Colm & Pandit, Lalita, Rabindranath Tagore: Universality and Tradition, Fairleigh Dickinson Univ Press, 2003.
10. Tagore, Rabindranath, My Reminiscences, The Macmillan Company, New York, 1917.